ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
भारत मौसम विज्ञान विभाग
गोविंद बल्लभ पंत कृषिऔर प्रौद्योगिकीविश्वविद्यालय
उधम सिंह नगर, पंतनगर, उत्तराखंड

मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं

दिनांक :03.10.2023

उधम सिंह नगर(उत्तराखंड) के मौसम का पूर्वानुमान – जारी करने का दिन :2023-10-03 (अगले5 दिनों के 8:30 IST तक वैध)

मौसम कारक	04/10/2023	05/10/2023	06/10/2023	07/10/2023	08/10/2023
वर्षा (मीमी)	2.0	0.0	0.0	0.0	0.0
अधिकतम तापमान(से.)	35.0	35.0	35.0	35.0	35.0
न्यूनतम तापमान(से.)	23.0	23.0	22.0	22.0	22.0
अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	75	80	80	75	75
न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	45	50	50	40	45
हवा की गति (किमी प्रति घंटा)	6	8	6	6	8
पवन दिशा (डिग्री)	130	130	130	130	130
क्लाउड कवर (ओक्टा)	1	1	1	1	1

सम सारांश / चेतावनी:

पिछले सात दिनों (26 सितंबर से 2 अक्टूबर) में 0.0 मिमी वर्षा दर्ज की गई और अधिकतम और न्यूनतम तापमान 32.1 से 34.6 डिग्री सेल्सियस और 21.5 से 24.4 डिग्री सेल्सियस के बीच रहा। पिछले सप्ताह मौसम साफ रहा। सुबह 0712 बजे सापेक्षिक आर्द्रता 84 से 93% के बीच तथा शाम 1412 बजे सापेक्षिक आर्द्रता 47 से 60% के बीच रही। हवा की गति 0.1 से 0.6 किमी प्रति घंटा थी और हवा की दिशा ज्यादातर उत्तर और उत्तर-उत्तर-पूर्व थी। आगामी 5 दिनों के पूर्वानुमान में 3 अक्टूबर को 2.0 मिमी वर्षा के साथ बाकि दिन मौसम साफ रहने का अनुमान है। अधिकतम और न्यूनतम तापमान 35 डिग्री सेल्सियस और 22-23 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा। 6-8 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं ज्यादातर दक्षिण-पूर्व दिशा से चलेंगी। मौसम साफ और शुष्क रहने की उम्मीद है।

सामान्य सलाहकार:

किसानों को सलाह दी जाती है कि वे पिछले सप्ताह के मौसम, मौसम पूर्वानुमान और कृषि मौसम संबंधी सलाह के लिए "मेघदूत ऐप" और बिजली गिरने की जानकारी प्राप्त करने के लिए "दामिनी ऐप" डाउनलोड करें। मेघदूत और दामिनी ऐप को गूगल प्ले स्टोर (एंड्रॉइड उपयोगकर्ता) और ऐप सेंटर (iOS उपयोगकर्ता) से डाउनलोड किया जा सकता है। इससे उन्हें कृषि गतिविधियों के संबंध में सही निर्णय लेने में मदद मिलेगी।

लघु संदेश सलाहकार:

पूर्वानुमान के अनुसार 3 अक्टूबर को हल्की बूंदाबांदी के साथ बाकि दिन क्षेत्र में मौसम साफ और शुष्क रहेगा, इसलिए फसल क्षेत्र में मिट्टी की नमी बनाए रखने के लिए हल्की सिंचाई की जानी चाहिए।

फ़सल विशिष्ट सलाह:

फ़सल	अवस्था	फ़सल विशिष्ट सलाह
चावल	पकने की अवस्था	पकने के चरण के दौरान धन का आम कीट ब्राउन प्लांट हॉपर है जिसके लिए किसानों को ट्राइफ्लूमेज़ोपाइरिम 10 एससी 235 मिली/ फिप्रोनिल 5 एससी 1000 मिली/ बुप्रोफेज़िन 25 एससी 1 लीटर/ थियामेथोक्साम 25 डब्लूएसजी 100 ग्राम को 500 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करना चाहिए। छिड़काव तने के पास करना चाहिए। कम संक्रमण की स्थिति में बुप्रोफेज़िन , अधिक संक्रमण की स्थिति में ट्राइफ्लूमेज़ोपायरिम और तना छेदक+ब्राउन प्लांट हॉपर के हमले की स्थिति में फिप्रोनिल 5 एससी का उपयोग करना चाहिए।
गन्ना	गन्ना बढ़ाव चरण/ बुवाई	प्रचलित कंडवा रोग को रोकने के लिए किसानों को बुआई के लिए प्रतिरोधी किस्मों और उपचारित गन्ने का उपयोग करने की आवश्यकता है। संक्रमित कमची और उनके समूहों को सावधानीपूर्वक हटा देना चाहिए/ जला देना चाहिए या मिट्टी में दबा देना चाहिए। संक्रमण से बचने के लिए तोड़े हुए गन्ने को खेत में नहीं रखना चाहिए। कुशल फसल चक्र या अरहर के साथ सहफसल लगाने से संक्रमण की तीव्रता को कम किया जा सकता है। शरदकालीन गन्ने की बुआई 15 अक्टूबर तक कर लेनी चाहिए और कार्बेन्डाजिम 50% डब्लू पी के 0.1% घोल में 10 मिनट तक उपचारित गन्ना बीज से करनी चाहिए। शरदकालीन बुआई के लिए गन्ने के डंठल का निचला दो तिहाई भाग प्रयोग किया जाता है।
मक्का	परिपक्वता	परिपक्व भुट्टों में उचित कृषि उपायों द्वारा पक्षियों के हमलों से बचें। भुट्टों की तुड़ाई तब करनी चाहिए जब वे पीली पत्तियों से ढके हों।
मूँग काला चना सोयाबीन	फली बनना/ परिपक्वता	पकने वाली दलहनी फसल की तदनुसार कटाई की जानी चाहिए और सूखने के लिए रखा जाना चाहिए।
अरहर (लाल चना/अरहर)	फली बनना	फलियों में दाना बने पर हल्की सिंचाई करें और कीट/रोग के लिए मुयाना करते रहे। सफेद मक्खी द्वारा प्रसारित पीले मोज़ेक वायरस की उपस्थिति पर, पाइरीप्रोक्सीफेन 10 ई.सी. 0.5 लीटर/हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में मिलाकर 10-12 दिनों के अंतराल पर डालें। किसानों को पीला मोज़ेक वायरस के प्रति प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग करना चाहिए ।
मूँगफली	खूटियां या फलिया बनना/ परिपक्वता	पेगिंग या फली बनने पर आवश्यकतानुसार सिंचाई करते हुए मिट्टी में पर्याप्त नमी बनाए रखनी चाहिए। समय पर बोई गई फसल को खोदकर और सुखाकर भंडारित कर लेना चाहिए।
तिल	वनस्पतिक विकास	फाइलोडी फाइटोप्लाज्म के कारण होता है जो पौधों , फूलों और पत्तियों के आकार को गुच्छों में बदल देता है और पौधे के हॉपर द्वारा फैलाया जाता है। फसल की समय पर

		बुआई, मिथाइल-ओ-डिमेटॉन 25 ई.सी. दवा का 1.0 लीटर/हेक्टेयर का 10-15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव और प्रभावित पौधों को जलाने से इसे रोका जा सकता है।
राई एवं तोरिया (लाही)	बुवाई	फसल की बुवाई सितम्बर के अंत से अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े के बीच करनी चाहिए। बुआई के समय पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45 सेमी तथा मेड़ों से 30 सेमी बनाये रखनी चाहिए । बीजों को मेटालेक्सिल 35 डब्लू.एस.4 ग्राम/किलो बीज के दर से उपचारित करना चाहिए।

बागवानी विशिष्ट सलाह:

बागवानी	अवस्था	बागवानी विशिष्ट सलाह
गोभी	परिपक्वता/वानस्पतिक	अगेती किस्मों की तुड़ाई कर उन्हें उपभोग के लिए बाजार में भेजना चाहिए। मध्य किस्मों में यूरिया की टॉप-ड्रेसिंग की जानी चाहिए और निराई, गुड़ाई और सिंचाई जैसी नियमित प्रथाओं की निगरानी की जानी चाहिए।
मूली/ गाजर/ चुकंदर	बुआई/अंकुरण	खेत में मिट्टी की नमी बनाये रखनी चाहिए तथा फसल की नियमित निराई-गुड़ाई एवं विरलीकरण करते रहना चाहिए।
पालक/ मेथी	बुआई/अंकुरण	पत्तेदार सब्जियों के लिए बुवाई का यह सबसे अच्छा समय है। पूरे फसल मौसम में 3-4 सिंचाई आवश्यक है और इस अवधि के दौरान मिट्टी में नमी बनाए रखी जानी चाहिए।
सिट्रस	फ्रूटिंग	यदि सिट्रस पीला मोज़ेक वायरस के लक्षण दिखाई देते हैं तो संक्रमित टहनियों की छंटाई करें और प्रणालीगत कीटनाशक जैसे इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल 1 मिली/3 लीटर पानी या थियामिथोक्सेम 25% डब्ल्यूजी 1 ग्राम/3 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। कीट की प्रारंभिक उपस्थिति के दौरान थियामिथोक्सेम का पहला छिड़काव करें और कीट की तीव्रता के स्तर के आधार पर 15-21 दिनों के अंतराल पर 2-3 छिड़काव दोहराएं।

पशुपालन विशिष्ट सलाह:

पशुपालन	पशुपालन विशिष्ट सलाह
भैंस	जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पशुधन स्वस्थ रहे और उस से सही उत्पादन प्राप्त हो सके। पशुओं को हरा चारा कम मात्रा में दें तथा हरे चारे में सूखा चारा मिलाकर दें।
बकरी	ग्रामीण छेत्र में भेड़ एवं बकरियों को टिटेनस टॉक्साईड के 2 टिक्के एक माह पर, दूसरा 5 माह पर अवश्य लगवायें, जिससे नवजात मेमनों को टिटनेस नमक बीमारी न हो।

मुर्गी पालन विशिष्ट सलाह:

मुर्गी पालन	मुर्गी पालन विशिष्ट सलाह
पोल्ट्री	नमी की वजह से आहार में फफूॅदी लग जाती है जिससे आहार में पोषक तत्व की कमी हो जाने से अपलाटाॅक्सीकोशिश नामक बीमारी हो जाती है। इससे मुर्गियों के पेट में कीड़े पड़ने से अण्डा देने की क्षमता घट जाती है ऐसी मुर्गियों को पशु चिकित्सक की सलाह से कृमिनाशक दवा महीने में एक बार अवश्य दें।